इकाई 13: नागालैंड की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय

इकाई की रूपरेखा:

13.1 उद्देश्य
13.2 प्रस्तावना
13.3 जनजातीय स्थिति
  13.3.1 प्रमुख नागा जनजातियाँ
  13.3.2 जनजातीय संरचना और कुल व्यवस्था
13.4 लोकविश्वास
13.5 लोक पर्व-उत्सव
13.6 लोकाचार एवं अंधविश्वास
13.7 खान-पान
13.8 समाज व्यवस्था
13.9 सारांश
13.10 अधिक जानने के लिए पढ़े
13.11 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
13.12 अभ्यास प्रश्न

13.1 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन से अध्येता—

- नागालैंड की प्रमुख जनजातियों की पहचान, उनकी विविधता और सांस्कृतिक विशेषताओं के बारे में समझ सकेंगे।
- नागा समाज के लोकविश्वासों, धार्मिक मान्यताओं और आध्यात्मिक जीवन को पहचान सकेंगे।
- विभिन्न नागा जनजातियों के लोक पर्व-उत्सवों, त्योहारों और सांस्कृतिक आयोजनों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- नागा समाज की खान-पान की परंपराओं, सामाजिक व्यवस्था और जीवनशैली का विश्लेषण कर सकेंगे।

- नागा खान-पान की परंपराओं और उनके सांस्कृतिक महत्व की जानकारी ग्रहण कर सकेंगे।
- नागा समाज-व्यवस्थाजैसे ग्राम-संगठन, मोरुंग-प्रथा और लैंगिक भूमिकाओं को समझ सकेंगे।
- नागालैंड की लोक-संस्कृति के संरक्षण और विकास की आवश्यकता का मूल्यांकन कर सकेंगे।

13.2 प्रस्तावना:

भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थित नागालैंड एक ऐसा पर्वतीय राज्य है जो अपनी अनुपम प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ असाधारण सांस्कृतिक विविधता के लिए विश्व जानी जाती है। यह राज्य उत्तर में अरुणाचल प्रदेश, पश्चिम में असम, दक्षिण में मणिपुर और पूर्व में म्यांमार (बर्मा) की सीमाओं से घिरा हुआ है। 1 दिसंबर, 1963 को एक पूर्ण राज्य के रूप में स्थापित इस प्रदेश की भूमि पर सोलह से अधिक प्रमुख जनजातियाँ सदियों से अपनी स्वतंत्र जीवन-पद्धति, भाषा, लोक-परंपरा और सांस्कृतिक विरासत के साथ निवास करती आई हैं। जब नागालैंड को राज्य का दर्जा दिया गया तब वह 16वाँ भारत गणराज्य का 16वाँ राज्य थी।

नागालैंड की विशेषता इसकी जनजातीय विविधता में बसती है। प्रत्येक जनजाति की अपनी विशिष्ट भाषा, प्रथाएँ, कानून और उत्सव हैं। यही विविधता नागालैंड की सांस्कृतिक संपदा का मूल स्रोत है। यहाँ 16 मुख्य नागा जनजातियाँ निवास करती हैं,अंगामी, आओ, सेमा, कोन्याक, लोथा, चाखेसांग, चांग, खियामनियुंगन, फोम, पोचुरी, रेंगमा, संगतम, यिमचुंगर और जेलियांग के अलावा कछारी और कुकी जनजातियाँ भी नागालैंड में निवास करती हैं। प्रत्येक जनजाति की अपनी अलग भाषा, पहनावा, रीति-रिवाज और सांस्कृतिक पहचान है। इसके अतिरिक्त, मणिपुर, असम, अरुणाचल प्रदेश और म्यांमार में भी कई नागा जनजातियाँ बसी हुई हैं। ऐसे में नागालैंड की लोक-संस्कृति को समझना केवल एक जनजाति या भाषा को समझना नहीं है, बल्कि यह हर एक जनजाति से होकर गुजरना है। और प्रत्येक जनजाति की यात्रा एक ऐसी यात्रा है जहाँ प्रकृति, आत्मा, समुदाय और परंपरा एक-दूसरे से अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। कह सकते हैं कि कोई एकरूप 'नागा अस्मिता' नहीं है।

आज अधिकांश नागा ईसाई धर्म के अनुयायी हैं, किंतु उनकी लोक-संस्कृति की जड़ें उनके प्राचीन आत्मावादीविश्वासों, कृषि-जीवन, मोरुंग-प्रथाऔर मौखिक परंपराओं में

गहरी धँसी हुई हैं। एनसाइक्लोपीडिया ऑफ नॉर्थ-ईस्ट इंडिया के अनुसार, नागा जनजातियाँ मंगोलॉयड प्रजाति-समूह से संबंधित हैं और उनकी बोलियाँ तिब्बत-बर्मी भाषा-परिवार की शाखाएँ हैं।

आज नागा समाज अपनी पारंपरिक संस्कृति को आधुनिकता के साथ संतुलित करने का प्रयास कर रहा है। आगे के उपशीर्षकों के अंतर्गत हम नागा जनजातियों की विविध विशिष्टताओं को देखने का प्रयास करेंगे।

13.3 जनजातीय स्थिति

नागालैंड की जनजातीय संरचना भारत के किसी भी अन्य राज्य से भिन्न और जटिल है। यहाँ की प्रत्येक जनजाति अपनी भाषा, प्रथाओं, पोशाक, आभूषणों और त्योहारों में इतनी अलग है कि उन्हें एक समान 'नागा' के रूप में वर्गीकृत करना सांस्कृतिक दृष्टि से एक सरलीकरण होगा। यहाँ 'नागा' शब्द किसी एक समरूप या एकल जनजाति को इंगित नहीं करता, बल्कि यह समान सांस्कृतिक और भाषाई लक्षणों वाले अनेक पहाड़ी कबीलों का एक विशालसंपुंज है जो मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से मंगोलॉयड प्रजाति समूह से संबंधित हैं। प्रत्येक जनजाति का अपना एक परिभाषित भौगोलिक क्षेत्र हैऔर प्रत्येक कबीले के भीतर सामाजिक पदानुक्रम और लोकाचार स्वतंत्र रूप से विकसित हुए हैं।

जैसा की पहले भी कहा गया है कि नागा जनजातियाँ आपस में भाषाई और सांस्कृतिक रूप से काफी भिन्न हैं। बावजूद इसकेइनमें कुछ समानताएँ भी हैं, जैसे पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था, कुल (क्लैन) की महत्वपूर्ण भूमिका, गाँव-आधारित राजनीतिक संगठन और कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था। प्रत्येक जनजाति अपने को एक अलग 'जाति' के रूप में देखती है और अपनी भाषा, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक पहचान पर गर्व करती है।

13.3.1 प्रमुख नागा जनजातियाँ

1. अंगामी

अंगामी नागालैंड की प्रमुख और सबसे विकसित जनजातियों में से एक है, जिनका मूल नाम 'तेनगिमा' है। ये मुख्य रूप से कोहिमा जिले में निवास करते हैं और इनकी भाषा तिब्बती-बर्मी परिवार से संबंधित है। शिल्पकला और सीढ़ीदार चावल की खेती इनकी विशेषता है। पारंपरिक वेशभूषा में पुरुष नीले रंग का किल्ट (कमर से

घुटनों तक का कपड़ा) बांधते हैं और विशिष्ट कढ़ाई वाले शॉल ओढ़ते हैं। लाल पृष्ठभूमि में सफेद-काली धारियों वाले शॉल को 'लो-रुमबोसु' और काले रंग में लाल-पीली धारियों वाले शॉल को 'लोबे' कहा जाता है। महिलाएँ मेखला (धोती जैसा पहनावा) पहनती हैं और मोतियों, हाथीदांत के कंगन और सूअर के दांतों के आभूषण धारण करती हैं।

2. आओ

आओ नागालैंड की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है, जो मुख्य रूप से मोकोकचुंग जिले में बसी है। ये शिक्षा में अग्रणी रहे हैं और राजनीतिक-प्रशासनिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके द्वारा झूम खेती आज भी जारी है। इनकी तीन उप-जनजातियाँ हैं: चोंगली, मोंगसेन और चांगकी। पुरुष 'त्सुंगकोटेप्सू' शॉल ओढ़ते हैं, जिस पर बाघ, मिथुन, इंसानी सिर और भाले के चित्र बने होते हैं, ये ओढ़ने वाले की सामाजिक प्रतिष्ठा और वीरता दर्शाते हैं। महिलाएँ मोतियों की मालाएँ, धातु के कंगन और कान की बालियाँ पहनती हैं। पुरुष धातु के कटार और भाले सजावट के रूप में ले जाते हैं।

3. सेमा

सेमा जनजाति मुख्य रूप से ज़ुनहेबोटो जिले में निवास करती है। ये जनजाति अपने साहस के लिए प्रसिद्ध है। पुरुष किल्ट पहनते हैं, जबकि महिलाएँ मेखला और शॉल का उपयोग करती हैं। इनके शॉल में विशिष्ट लाल-काले रंग की संरचना होती है। महिलाएँ मोतियों की मालाएँ, सुअर के दाँत और धातु के कंगन पहनती हैं। पुरुष भाले और दाव को आभूषण के रूप में लटकाते हैं। 'अप्फी लाहो' इनका पारंपरिक नृत्य है, जो पुरुषों और महिलाओं द्वारा अलग-अलग प्रकार से प्रदर्शित किया जाता है।

4. कोन्याक

कोन्याक मुख्य रूप से मोन जिले में निवास करती है और संख्या में सबसे बड़ी जनजाति है। ये युद्ध-प्रिय स्वभाव, सिर काटने की प्रथा और शक्तिशाली गाँव प्रमुखों (आंग) के लिए प्रसिद्ध हैं। पुरुष किल्ट, शॉल और सिर पर पंखों वाला आभूषण पहनते हैं। महिलाएँ मेखला, ब्लाउज और शॉल पहनती हैं। कोन्याक शॉल में विशिष्ट ज्यामितीय पैटर्न और चमकीले रंग होते हैं। पुरुषों के शरीर पर टैटू होते थे और मानव खोपड़ी को ट्रॉफी के रूप में रखते थे। महिलाएँ मोतियों की मालाएँ, धातु के कंगन, कान की बालियाँ और नाक के आभूषण पहनती हैं। पुरुष भाले, चाकू और धातु के कटार रखते हैं।

5. लोथा

लोथा जनजाति मुख्य रूप से वोखा जिले में बसी है और समृद्ध लोक-संस्कृति, त्योहारों और नृत्य परंपराओं के लिए जानी जाती है। पुरुष किल्ट और शॉल पहनते हैं, जबकि महिलाएँ मेखला और शॉल का उपयोग करती हैं। इनके शॉल में ज्यामितीय संरचना और चमकीले रंग होते हैं। महिलाएँ मोतियों की मालाएँ, कान की बालियाँ और नाक के आभूषण पहनती हैं। पुरुष धातु के कटार और भाले रखते हैं।

6. चाखेसांग

चाखेसांग शब्द तीन जनजातियों-'चाख्रु', 'खेजा' और 'सांगतम' के नामों के अक्षरों से बना है। ये फेक जिले में निवास करते हैं और अंगामी जनजाति से सांस्कृतिक-भाषाई समानता रखते हैं। युद्ध नृत्य के समय पुरुष 'खोज़ा-रा' शॉल को तिरछा पहनते हैं और 'रामिनी' कपड़ा ओढ़ते हैं। महिलाएँ 'चितोन्यी' और 'गिगी' पहनती हैं। मुकुट पर शिकार किए गए पक्षियों के पंख लगे होते हैं, जो वीरता का प्रतीक हैं। आभूषणों में लकड़ी का दाव, कंगन, 'बाथो' और 'बाखे' चूड़ियाँ, मोती और लकड़ी के गहने शामिल हैं।

7. चांग

चांग जनजाति तुएनसांग जिले में निवास करती है। इनकी सामाजिक संरचना में चार प्रमुख कुल (फांग) हैं: कांगशाठ, ओंग, होन्गांग और लोमो। ये लकड़ी के नक्काशी और बुनाई के लिए प्रसिद्ध हैं।

8. खियामनियुंन

यह नागाओं की प्रमुख जनजाति है, जो भारत और म्यांमार दोनों में निवास करती है। इनका क्षेत्र नागालैंड के पूर्वी भाग और म्यांमार के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है। त्योहारों का उत्सव एकता, शांति और सद्भाव का प्रतीक है। 'त्सोकुम' सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। यह जनजाति योद्धा परंपरा से जुड़ी है और वेशभूषा-आभूषणों में युद्ध संबंधी प्रतीक प्रमुख हैं।

9. फोम

फोम मुख्य रूप से लोंगलेंग जिले में निवास करते हैं। समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, कृषि परंपराओं और हस्तशिल्प के लिए पहचाने जाते हैं। पारंपरिक वेशभूषा में शॉल, मुकुट और पशु हड्डियों से बने आभूषण शामिल हैं।

10. पोचुरी

पोचुरी मुख्य रूप से मेलुरी जिले में निवास करते हैं। इनकी पहचान तीन नागा समुदायों-'कुपो', 'कुचु' और 'खुरी' के विलय से बनी है। नाम तीन मूल गाँवों (सापो, केचुरी और खुरी) के संक्षिप्त रूप से मिलकर बना है। ये मुख्य रूप से सीढ़ीदार खेती करते हैं और शिकार, मछली पकड़ने और बांस शिल्प (जैसे 'अतुतु' नामक पारंपरिक बांस की तुरही) में माहिर हैं।

11. रेंगमा

रेंगमा का मुख्य केंद्र त्सेमिन्यू जिला है और यह तिब्बती-बर्मन भाषा परिवार से संबंधित है। ये मुख्य रूप से कृषि-प्रधान हैं। ऐतिहासिक रूप से झूम खेती और अब स्थायी सीढ़ीदार खेती भी करते हैं। पुरुषों की पोशाक में शॉल, मुकुट और युद्ध संबंधी आभूषण शामिल हैं। महिलाएँ रंगीन शॉल और विशिष्ट गहने पहनती हैं। शॉल पर विशेष डिजाइन जनजातीय पहचान का प्रतीक हैं।

12. संगतम

संगतम मुख्य रूप से तुएनसांग और किफिरे जिलों में निवास करते हैं। यह समुदाय गोत्रों में विभाजित है जिनमें धोंगरू, जिंगरू, लांगतिधोंगरू, मुंगजारू, अनारू और रुदिधोंगरू आदि प्रमुख गोत्र हैं। मुख्य व्यवसाय कृषि है और पारंपरिक झूम खेती की जाती है। मुख्य फसलें चावल, मक्का और बाजरा हैं। पारंपरिक पोशाक में शॉल, मुकुट और पशु हड्डियों से बने आभूषण शामिल हैं। त्योहारों में पारंपरिक नृत्य और गीत प्रमुख हैं।

13. यिमचुंगर

यिमचुंगर मुख्य रूप से म्यांमार की सीमा से लगे तुएनसांग और किफिरे जिलों में निवास करते हैं। इनका मुख्य आधार कृषि है। झूम खेती में धान, मक्का और बाजरा मुख्य फसलें हैं। ये हथकरघा और बुनाई में भी कुशल हैं। पारंपरिक पोशाक में शॉल, मुकुट और विशेष आभूषण शामिल हैं। अब आधिकारिक तौर पर इन्हें यिमखिउंग कहा जाता है।

14. जेलियांग

जेलियांग पेरेन जिले में निवास करती है और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाली प्रमुख जनजाति है। ये मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर हैं। झूम और सीढ़ीदार खेती प्रमुख

हैं। 'तितली नृत्य' इनका पारंपरिक नृत्य है, जो लामसिंगी पर्व के दौरान प्रदर्शित किया जाता है।

इनके अलावा कछारी और कुकी जनजातियाँ भी नागालैंड में निवास करती हैं, जिनकी अपनी अलग पहचान और सांस्कृतिक विरासत है।

अपनी प्रगति जांचे:

प्रश्न संख्या 1: यिमचुंगर कहाँ निवास करते है?
प्रश्न संख्या 2: पोचुरी जनजाति की क्या विशेषता है?
प्रश्न संख्या 3: 'तितली नृत्य' किस जनजाति की पारंपरिक नृत्य है?
प्रश्न संख्या 4: यिमचुंगर जनजाति की पारंपरिक पोषक क्या है?

सामान्य विशेषताएँ

नागालैंड की सभी जनजातियों की पारंपरिक वेशभूषा और आभूषणों में कुछ सामान्य विशेषताएँ हैं। सभी जनजातियों के पुरुष और महिलाएँ पारंपरिक शॉल पहनते हैं, जो उनकी सामाजिक स्थिति और जनजातीय पहचान का प्रतीक होते हैं। शॉल के डिजाइन और रंग जनजाति के अनुसार भिन्न होते हैं।

नागा आभूषणों में हाथी दाँत, जंगली सूअर के दाँत, हॉर्नबिल पक्षी के पंख, समुद्री सीप, मोती, लोहा, पीतल और काँच का प्रयोग किया जाता है। पुरुष शिरस्त्राण पर पक्षियों के पंख और जानवरों के दाँत लगाते हैं, जो उनकी वीरता और शिकार कौशल का प्रतीक हैं। महिलाएँ गले में भारी हार, कान में बड़े झुमके, कलाई में चूड़ियाँ और कमर में पट्टियाँ पहनती हैं।

नागालैंड की सभी जनजातियों का सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम 'हॉर्नबिल महोत्सव'है।

13.3.2 जनजातीय संरचना और कुल व्यवस्था

नागा समाज की मूल संरचना कुल (क्लैन) आधारित है। प्रत्येक जनजाति में कई कुल होते हैं, जो पितृसत्तात्मक वंशानुक्रम में संचालित होते हैं। कुल आपस में परस्पर विवाह के नियम का पालन करते हैं, अर्थात एक ही कुल के सदस्यों के बीच विवाह निषिद्ध है। कुल की पहचान एक सामान्य पूर्वज से होती है और इसकी सदस्यता जन्म से निर्धारित होती है।

कुछ जनजातियों में, जैसे कोन्याक और चांग, कुलों के बीच एक सामाजिक पदानुक्रम भी मौजूद है। उदाहरण के लिए, चांग समाज में कांगशाउ कुल को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, क्योंकि पौराणिक कथा के अनुसार ये लोग पहले पृथ्वी पर आए थे। कुल संरचना नागा समाज की राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन का आधार है।

13.4 लोक विश्वास

नागा जनजातियों का पारंपरिक धर्म प्राणीवाद या जीववाद था, जिसमें मनुष्य, प्रकृति और अलौकिक शक्तियों के बीच निरंतरता में विश्वास किया जाता था। नागाओं का विश्वास तीन स्तरों पर विभाजित था: स्वर्ग (स्वर्गीय शक्तियाँ), पृथ्वी (मनुष्य और जीव-जंतु) तथा पाताल (पातालीय आत्माएँ)। विभिन्न जनजातियाँ ब्रह्मांड के नियामक के रूप में एक सर्वोच्च शक्ति की कल्पना करती थीं।

कोन्याक नागाओं में 'गवांग' आकाश का सर्वोच्च देवता है, जो सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है तथा सामाजिक-धार्मिक नियमों का उल्लंघन करने वालों को दंडित करता है। जेलियांग नागाओं में 'ट्विंगवांग' सृष्टि का कर्ता माने जाते हैं। कछारी आदिवासी 'सिबराई' (शिव का रूप) और 'कामादी' को 'किरात' और 'किराती' के रूप में पूजते हैं।

पूर्वजों की आत्माओं की अमरता नागा लोकविश्वास का मूल आधार रही है। मान्यता थी कि मनुष्य की आत्मा मृत्यु के बाद भी अदृश्य शक्तियों के रूप में जीवित रहती है और यदि प्रसन्न न किया जाए, तो महामारी या अकाल ला सकती है। अंगामी जनजाति में प्रकृति आत्माएँ खेतों और जंगलों में वास करती हैं। इनके अनुसार सभी घटनाओं का संचालन 'तेरहूओमिया' नामक विभिन्न आत्माओं द्वारा होता है। आओ जनजाति में 'लिजाबा' कुल देवता और पृथ्वी के निर्माता हैं, जिन्हें भूमि और कृषि का रक्षक माना जाता है। आओ कबीले अपनी उत्पत्ति 'लुंगटेरोक' (छह पत्थर) से मानते हैं, जहाँ से तीन पुरुष और तीन महिलाओं के रूप में पूर्वज प्रकट हुए थे। लोथा समुदाय में 'अलहो' सर्वोच्च निर्माता और भाग्य नियंत्रक हैं। चांग जनजाति में 'संपुले मुखाओ' धान के खेतों की पवित्र आत्मा और उर्वरता की संरक्षक है। पोचुरी जनजाति के 'मुखु-मुथा' आकाश में निवास करते हैं। जेलियांग के मुख्य देवता 'तिंगवांग' सर्वोच्च ईश्वर, आकाश के देवता और सृष्टिकर्ता हैं, जो जीवन देते हैं और मार्गदर्शन करते हैं।

नागा समाज में आत्माएँ हर जगह मौजूद मानी जाती थीं-खेतों, धाराओं, जंगलों और वृक्षों में। कुछ शुभ और कुछ अशुभ थीं। ईसाई धर्म के आगमन से पूर्व, नागा

समाज पूरी तरह जीववाद और सर्वात्मवाद पर आधारित था, जिसमें पहाड़ों, नदियों, पाषाणों, वृक्षों और वन्यजीवों में अदृश्य, जादुई शक्ति का वास माना जाता था।

पत्थरों की पूजा एक विशिष्ट लोकविश्वास था। अनेक गाँवों के मध्य में पवित्र पाषाण शिलाएँ स्थापित थीं, जिनमें रक्षक आत्माओं का निवास माना जाता था। आओ नागाओं की 'छह पत्थरों' से मनुष्यों की उत्पत्ति की कथा और अंगामी नागाओं की 'केज़ाकेनोमा' की जादुई शिला इसी विश्वास को दर्शाती हैं। प्राकृतिक आपदाओं, ग्रहण और भूकंप को देवों के क्रोध का सूचक माना जाता था।

13.5 लोक पर्व-उत्सव

नागालैंड को भारत की 'त्योहारों की भूमि' कहा जाता है। यहाँ पूरे वर्ष विभिन्न जनजातियाँ अपनी अनूठी परंपराओं के साथ रंग-बिरंगे उत्सव मनाती हैं। अधिकांश नागा त्योहार कृषि चक्र यानी की बुवाई, फसल कटाई, निराई-गुड़ाई आदि से जुड़े होते हैं और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता से जुड़े हैं। ये केवल आनंद के क्षण नहीं, बल्कि सामूहिक एकता, पूर्वजों के प्रति सम्मान और आगामी वर्ष की समृद्धि के लिए अनुष्ठानिक साधनाएँ हैं।

अंगामी जनजाति का 'सेकेरनेई' फरवरी में मनाया जाता है। इसमें शरीर-आत्मा का शुद्धिकरण, नववर्ष का स्वागत और समृद्धि की प्रार्थना होती है। पुरुष पवित्र कुओं से जल लाते हैं और सामूहिक दावतें आयोजित होती हैं। 'तेर्हुन्यी' जून में धान की अच्छी खेती के बाद मनाया जाता है।

आओ जनजातिका 'मोआत्सु' मई के प्रथम सप्ताह में बुवाई मौसम की समाप्ति पर मनाया जाता है। 'त्सुंगरेमोंग' 1-3 अगस्त को कठिन बागवानी गतिविधियों के अंत और फसल मौसम की शुरुआत का प्रतीक है।

सेमा जनजाति का 'तुलुनी' जुलाई के दूसरे सप्ताह में अच्छी फसल के लिए धन्यवाद देने हेतु मनाया जाता है। 'अहुना' नवंबर में फसल कटाई से पहले खेती के कामों के समापन पर सामुदायिक भोज, नृत्य और गान के साथ मनाया जाता है।

कोन्याक जनजाति का प्रमुख त्योहार 'आओलेआंग' 1-6 अप्रैल को होता है। यह पुराने साल का अंत और नववर्ष की शुरुआत है, जो बुवाई पूर्ण होने के बाद वसंत ऋतु के आगमन से शुरू होता है। भरपूर फसल की प्रार्थना, पारंपरिक नृत्य और दावतें इसका मुख्य आकर्षण हैं।

लोथा जनजाति का 'तोखू इमोंग' 7 नवंबर से धान कटाई के बाद चार दिनों तक चलता है। यह फसल की सफल कटाई का धन्यवाद उत्सव है, जिसमें सामुदायिक भोज, नृत्य, गान, उपहार विनिमय, पुराने विवादों का समाधान, रस्साकशी और लोकनृत्य होते हैं। 'एम्ब्यू' बुआई से पहले अच्छी फसल की कामना में मनाया जाता है।

चाखेसांग जनजाति का 'सुक्रेन्ये' 15 जनवरी को 11 दिवसीय उत्सव के रूप में मनाया जाता है। किशोरों-युवतियों का पवित्रीकरण, पवित्र जलाशयों में स्नान और भाला पकड़ने की रस्म इसमें शामिल हैं। 'त्सुखेन्यी' मार्च-अप्रैल में बोवाई मौसम का प्रतीक है। 'न्गुन्यी' और 'खुत्थोन्यी' भी कृषि चक्र से संबंधित हैं। इनके पारंपरिक नृत्य में युगल, समूह और युद्ध नृत्य शामिल हैं।

चांग जनजाति का 'नाक्युलुम' जुलाई में फसल बुवाई के बाद मनाया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण कृषि-सांस्कृतिक त्योहार है। 'चांगसांग' नृत्य पारंपरिक पोशाक में किया जाता है। यह अंधकार पर प्रकाश की विजय और ऐतिहासिक विपदाओं से मुक्ति की स्मृति है। बाजरा पीसना, पारंपरिक भाप बिस्कुट बनाना और अलाव के गिर्द गीत इसके आकर्षण हैं।

खियामनियुंगन जनजाति का 'त्सोकुम सुमाई' सितंबर-अक्टूबर में भरपूर फसल के लिए आशीर्वाद हेतु मनाया जाता है। इसमें देवताओं को प्रार्थना और पालतू पशुओं की बलि दी जाती है। 'मियू' मई के दूसरे सप्ताह में तुएनसांग में मनाया जाता है।

फोम जनजाति का 'मोन्यू' 1-6 अप्रैल को लोंगलेंग में वसंत ऋतु और नववर्ष के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। यह सर्दियों के अंत और मानसून के आगमन का संकेत है।

पोचुरी जनजाति का 'येमशी' सितंबर-अक्टूबर में फेक में बोवाई से पहले मनाया जाता है। यह नई फसल के स्वागत और आशीर्वाद का त्योहार है, जिसे सभी वर्ग बड़े धूमधाम से मनाते हैं।

रेंगमा जनजाति का 'नागदा' नवंबर-दिसंबर में आठ दिनों तक चलता है। यह फसल कटाई का धन्यवाद उत्सव और कृषि मौसम के अंत का प्रतीक है। मान्यता है कि मृत पूर्वजों की आत्माएँ इस दौरान आती हैं। अंतिम दिन आग से बचाव, चूहों से फसलों की रक्षा और बुरी आत्माओं को भगाने के अनुष्ठान होते हैं।

संगतम जनजाति का 'अमोंगमोंग' सितंबर के प्रथम सप्ताह में तुएनसांग में नई फसल कटाई पर मनाया जाता है। घर के देवता और चूल्हे की तीन रखवाली पत्थरों की पूजा और नए अनाज का उपभोग इसमें शामिल है।

यिमचुंगर जनजाति का 'त्सुंगकमन्यो' मध्य जनवरी (14-17 जनवरी) को धूमधाम से मनाया जाने वाला प्रमुख शीतकालीन फसल-कटाई त्योहार है। यह धन्यवाद, सामुदायिक एकता और मेल-मिलाप का प्रतीक है। 'मेटेमनेओ' अगस्त-सितंबर में बाजरे की कटाई के बाद पाँच दिनों तक चलता है। यह मृतकों की आत्माओं के लिए शुभ माना जाता है और कृषि यंत्रों की पूजा होती है। इन पाँच दिनों में विवाह और सगाई समारोह आयोजित किए जाते हैं क्योंकि ये अत्यंत शुभ माने जाते हैं।

जेलियांग जनजाति का 'हेगा' 10-15 फरवरी को फसल कटाई के बाद मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार है। सर्वशक्तिमान ईश्वर से समृद्धि, साहस और अच्छी फसल की प्रार्थना, युवा जोड़ों के भविष्य की कामना, पारंपरिक गीत-संगीत और समुदाय का आनंद-विश्राम इसमें शामिल है।

इसके अलावा दिमासा कछारी समुदाय का 'बुशु' जनवरी के अंतिम सप्ताह में चांदनी रात में फसल कटाई उत्सव के रूप में मनाया जाता है। कुकी समुदाय के प्रमुख त्योहार 'मिमकुट' (17 जनवरी, फसल कटाई), 'चावांग कुट' (शरद ऋतु, कृषि वर्ष समापन) और 'छापफौ कुट' (बुवाई चक्र) हैं। 'मिमकुट' स्वर्ग के देवता चांग पाथेन के प्रति सम्मान और आशीर्वाद का प्रतीक है।

सभी नागा जनजातियाँ सामूहिक रूप से 1-10 दिसंबर को हॉर्नबिल फेस्टिवल मनाती हैं। यह पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण है क्योंकि सभी जनजातियाँ एक स्थान पर दिखाई देती हैं। किसामा हेरिटेज विलेज में आयोजित यह उत्सव नागा सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और नृजातीय एकता को बढ़ावा देता है। इसमें पारंपरिक 'मोरंगों' का प्रदर्शन, लोकनृत्य, स्वदेशी खेल और संगीत समारोह होते हैं।

नागालैंड के त्योहार केवल उत्सव नहीं, बल्कि जनजातीय जीवन की आत्मा हैं, जो कृषि, प्रकृति और सामुदायिक बंधन को जीवंत रखती हैं।

13.6 लोकाचार एवं अंधविश्वास

नागा लोक-संस्कृति के लोकाचार अत्यंत विशिष्ट, साहसी और उनके प्राचीन जीववादी दृष्टिकोण से संचालित रहे हैं। नागा समाज में वीरता, कबीले के प्रति वफादारी और पूर्वजों के अलिखित प्रथागत नियमों का पालन करना जीवन का सर्वोच्च मूल्य माना जाता था।

एक समय नरमुंड शिकार के लिए नागा जनजाति जाने जाते थे। मानव जाति के इतिहास में उन्हें लंबे समय तक दुर्दांत नरमुंड शिकारियों के रूप में चित्रित किया

गया, परंतु नागा जीवन दर्शन में इस प्रथा का स्थान अत्यंत पवित्र और कबीले के अस्तित्व से जुड़ा था। नरमुंड शिकार हिंसा के नाम पर हिंसा नहीं थी, बल्कि कबीले की समृद्धि के लिए की जाने वाली एक अनिवार्य अनुष्ठानिक क्रिया थी। जो योद्धा शत्रु का सिर काट लाता था, उसे गाँव में 'सच्चे नायक' का सम्मान मिलता था। इन कटे सिरों को गाँव के सामूहिक युवा गृह 'मोरुंग' में या गाँव के राजा (आँग) के घर के प्रवेश द्वार पर लटकाया जाता था।

नागाओं का 'जीवन शक्ति' के सिद्धांत परविश्वास रहा है। वे अब भी मानते हैं कि इस ब्रह्मांड में जीवन, वनस्पति और फसलों की प्रचुरता एक अदृश्य, सीमित और भौतिक 'जीवन शक्ति' पर निर्भर करती है। मानव शरीर के भीतर इस जीवन शक्ति का मुख्य केंद्र उसका सिर (मस्तिष्क) होता है।

'गोदना'(टैटू) भी कुछ नागा जनजातियों के जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा रहा है। विशेषकर कोन्याक और चांग नागाओं में गोदनेकी प्रथा नरमुंड शिकार और वीरता केपदक्रम से सीधे तौर पर जुड़ी थी। कोन्याक कबीले में चेहरे पर जटिल ज्यामितीय गोदने कराने का गौरवशाली अधिकार केवल उसी योद्धा को प्राप्त होता था जो युद्ध से शत्रु का सिर काटकर लाता था या युद्ध में असाधारण पराक्रम दिखाता था।वहीं महिलाओं के लिए टैटू उनके शारीरिक विकास और वैवाहिक मील के पत्थर को दर्शाते थे।कोन्याक लड़कियों के वयस्क होने पर उनकी पिंडलियों पर, सगाई होने पर उनके घुटनों के पिछले हिस्से पर, और प्रथम संतान के जन्म के बाद उनके शरीर के अन्य हिस्सों पर विशिष्ट डिजाइन उकेरे जाते थे।

नागा जनजातियों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता रही है उनकी पारंपरिक युवा गृह प्रणाली जिसे 'मोरुंग'कहा जाता है। नागालैंड के सामाजिक लोकाचार में 'मोरुंग' की भूमिका कबीले की धड़कन के समान थी। यह गाँव के कुंवारे युवकों के लिए एक ऐसी जगह थी जहां सामूहिक रूप से सोया जाता था और प्रशिक्षण लिया जाता था। यहाँ युवा लड़के कबीले के बुजुर्गों की देखरेख में रहते थे। यहाँ उन्हें कबीले की लोक-कथाएं, युद्ध कौशल, लकड़ी की नक्काशी, बेंत की बुनाई, और कबीले के अंधविश्वासों व मर्यादाओं की कठोर दीक्षा दी जाती थी। मोरुंग के युवा गाँव के लिए सुरक्षात्मक प्रहरी हुआ करते थे। मोरुंग हमेशा गाँव के मुख्य प्रवेश द्वार के निकट बनाए जाते थे ताकि शत्रु कबीले के हमले के समय मोरुंग के युवा तुरंत गाँव की रक्षा के लिए मोर्चा संभाल सकें।

नागा जीवन की दैनिक गतिविधियों पर 'गेन्ना' (निषेध) का पूर्ण नियंत्रण था। गेन्ना का अर्थ है किसी कार्य, भोजन, स्पर्श या गतिविधि पर धार्मिक और अंधविश्वास आधारित पूर्ण प्रतिबंध।

प्राकृतिक आपदाओं के समय यदि गाँव में कोई अमंगलकारी घटना (जैसे आकाशीय बिजली गिरना, भूकंप आना, या महामारी का फैलना) होती थी, तो गाँव का पुजारी तुरंत सामूहिक 'गेन्ना' घोषित कर देता था। इस अवधि में कोई भी ग्रामीण अपने घर से बाहर कदम नहीं रख सकता था, खेतों में काम पूरी तरह ठप्प हो जाता थाऔर बाहरी लोगों का गाँव में प्रवेश वर्जित होता था। यदि कोई व्यक्ति गेन्ना के नियमों का उल्लंघन करता था, तो माना जाता था कि देवी-देवता कुपित होकर पूरे कबीले की फसलों को नष्ट कर देंगे।

13.7 खान-पान

नागालैंड का खान-पान अपनी सादगी, प्राकृतिक अवयवों के शुद्धतम उपयोग और प्रचुर मांसाहार के लिए जानी जाती है। पारंपरिक नागा भोजन में कृत्रिम तेल, घी और मसालों का उपयोग अत्यंत नगण्य होता है। भोजन पकाने की मुख्य शैलियों में उबालना, भाप देना और चूल्हे के धुएं में सुखाना शामिल हैं, जो पहाड़ी जीवन की आवश्यकताओं के अनुकूल विकसित हुई हैं।

कुछ प्रसिद्ध भोज्य पदार्थ हैं गाल्हो, अखोनी, अनिशी और धुएं से सुखाया गया माँस है। इसके अलावा इनके पारंपरिक पेय होते हैं।

'गाल्हो'संपूर्ण नागालैंड का एक अत्यंत लोकप्रिय, सुपाच्य और पारंपरिक व्यंजन है जो मूलतः चावल की एक विशेष खिचड़ी या गाढ़ा सूप है। इसे पकाने के लिए स्थानीय जैविक चावल, पहाड़ी जंगलों से एकत्रित की गई प्रचुर हरी पत्तेदार सब्जियाँ (विशेषकर कद्दू और सरसों के पत्ते), सूखी लाल मिर्च और अखोनीका उपयोग किया जाता है। विशेष अवसरों पर इसमें प्रचुर मात्रा में स्मोक्ड पोर्क (धुआं दिया हुआ सूअर का मांस) या बीफ के बारीक टुकड़े मिलाए जाते हैं और इसे धीमी आंच पर तब तक पकाया जाता है जब तक कि सभी अवयव एक गाढ़े सूप का रूप न ले लें।

'अखोनी'सेमा (सुमी) नागा जनजाति द्वारा विकसित की गई है जोसंपूर्ण नागालैंड में भोजन के स्वाद को बढ़ाने वाला एक अनिवार्य घटक है। यह सोयाबीन से तैयार होती है। सोयाबीन के दानों को पानी में अच्छी तरह उबाल लिया जाता है। इसके बाद

उबले हुए दानों को प्रचुर मात्रा में केले के पत्तों में लपेटकर टोकरियों में बंद कर दिया जाता है और चूल्हे की मंद आंच के समीप लगभग एक सप्ताह के लिए खमीरी उठने के लिए रख दिया जाता है। जब सोयाबीन से एक अत्यंत तीखी गंध आने लगती है, तो इसे ओखली में कूटकर पेस्ट बनाया जाता है। इस पेस्ट को गोल टिकियों के रूप में सुखाकर साल भर के लिए रख लिया जाता है।

'अनिशी', आओ नागा कबीले का यह एक अत्यंत अनूठा और विशिष्ट व्यंजन है, जिसे अरबी के पत्तों से तैयार किया जाता है। अनिशी का स्वाद खट्टा-कसैला होता है। इसे स्मोक्ड पोर्क, सूखी मछली या ताजे सूअर के मांस के साथ उबालकर एक गहरा, गाढ़ा और अत्यंत सुगंधित स्ट्यू तैयार किया जाता है।

सभी नागा समुदायों की विशेषता यह है कि स्मोक्ड मीट और पारंपरिक पेय उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। पहाड़ी इलाकों में मांस को लंबे समय तक सड़ने से बचाने के लिए नागाओं ने धुआं देकर सुखाने की अद्भुत तकनीक विकसित की है। रसोई के चूल्हे के ऊपर बने विशेष लकड़ी के मचानों पर मांस (पोर्क या बीफ) के बड़े-बड़े टुकड़ों को टांग दिया जाता है, जहाँ वे चूल्हे की लकड़ी के धुएं और गरमाहट से हफ्तों तक धीरे-धीरे सूखते हैं। यह स्मोक्ड पोर्क बाहर से काला और कठोर हो जाता है, परंतु भीतर से अत्यंत नर्म और धुएं की सोंधी महक से लबालब रहता है। इसके अतिरिक्त, चावल से तैयार की जाने वाली पारंपरिक बीयर 'ज़ू' या 'रोही' का सेवन कबीलाई जीवन में आम सी बात है।

13.8 समाज व्यवस्था

नागा समाज मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक रहा है और वर्तमान में भी वही स्थिति है। गोत्रों से बाहर विवाह करने की प्रथा रही है और यह समाज पूरी तरह से विकेंद्रीकृत स्वशासन प्रणाली से संचालित रहा है। यहाँ प्रत्येक गाँव अपने आप में एक 'स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य' के समान कार्य करता था, जहाँ ग्राम स्वराज की प्राचीन परंपराएं आज भी जीवित हैं।

प्रत्येक नागा गाँव कई भौगोलिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में विभाजित होता है, जिन्हें 'खेल' कहा जाता है। प्रत्येक खेल का स्वामित्व और नियंत्रण एक या दो विशिष्ट गोत्रों के पास होता है। गोत्र के सदस्य अपने साझा पूर्वज के प्रति गहरी निष्ठा रखते हैं। एक ही खेल के भीतर रहने वाले सह-गोत्रीय लोगों के बीच विवाह संबंध पूर्णतः वर्जित होते हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु:

नागालैंड की विभिन्न जनजातियों में न्याय और प्रशासनिक व्यवस्था को संचालित करने के अलग-अलग पारंपरिक स्वरूप रहे हैं।आओ जनजाति में अत्यंत लोकतांत्रिक स्वशासन प्रणाली पाई जाती है, जिसे 'पुतु मेन्डेन' कहा जाता है। इन चयनित जनप्रतिनिधियों को 'ततार' कहा जाता है। परिषद के सर्वोच्च प्रमुख को 'उंगेर' (Unger) कहा जाता है, जो मुख्य धार्मिक पुजारी भी होता है। इसके ठीक उलट कोन्याक नागा समाज गाँव का प्रमुख वंशानुगत राजा 'आँग' होता था। आँग का अपनी प्रजा और भूमि पर पूर्ण और दैवीय नियंत्रण होता था। वहीं अंगामी समाज भी लोकतांत्रिक परंपराओं से संचालित होता रहा है, जहाँ बुजुर्गों की परिषद 'चापी' आपसी सहमति से प्रथागत न्याय प्रदान करती है।

महिलाओं के सामाजिक स्थान की जहां तक बात है वहाँ नागा समाज के पितृसत्तात्मक समाज होने की वजह से महिलाओं को कबीले की महत्वपूर्ण राजनीतिक निर्णयों में भाग लेने की पारंपरिक अनुमति नहीं थी, बावजूद इसके समाज में उनका स्थान अत्यंत सम्मानजनक और स्वतंत्र रहा है। वे कृषि कार्यों, विपणन, वस्त्र बुनाई और आर्थिक गतिविधियों में पूरी तरह स्वतंत्र हैं।वर्तमान में राजनीति को छोड़कर महिलाओं की सहभागितालगभग हर क्षेत्र में पुरुषों से अधिक है।

स्वतंत्रता के बाद, भारत सरकार ने नागा समाज की सांस्कृतिक स्वायत्तता और प्रथागत कानूनों को अक्षुण्ण रखने के लिए ऐतिहासिक संवैधानिक प्रावधान किए। संविधान के अनुच्छेद 371(A) के तहत नागालैंड में संसद का कोई भी ऐसा कानून लागू नहीं हो सकता जो उनके सामाजिक-धार्मिक प्रथाओं, प्रथागत कानूनों, न्याय प्रणाली और भूमि स्वामित्व को प्रभावित करता हो, जब तक कि राज्य की विधानसभा इसकी स्वीकृति न दे। मौखिक लोक-परंपराओं और पूर्वजों के अलिखित नियम का महत्व आज भी महत्व रखता है।

13.13 सारांश

नागालैंड की लोक-संस्कृति भारत के अत्यंत अनूठे और अमूल्य सांस्कृतिक आयामों में से एक है। भौगोलिक अलगाव, सघन वनों और दुर्गम पहाड़ियों ने प्राचीन काल से ही इन जनजातियों को एक स्वतंत्र, स्वावलंबी सामाजिक संरचना प्रदान की थी। एक दूसरे से कबीलाई युद्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने नागाओं को एक वीर, स्वाभिमानी

और स्वतंत्रता-प्रिय योद्धा जाति के रूप में स्थापित किया।नागालैंड की लोक-संस्कृति विविधता में एकता, प्रकृति के साथ तादात्म्य और अपने गौरवशाली ऐतिहासिक अतीत के प्रति अदम्य सम्मान का एक अद्भुत दस्तावेज है। यहाँ की प्रत्येक जनजाति अपनी अनूठी भौगोलिक अवस्थिति और जीवन शैली के माध्यम से इस पर्वतीय क्षेत्र की अनमोल धरोहर को जीवित रखे हुए है। सदियों पुरानी जीववादी परंपराओं का ईसाई आस्था के साथ समन्वय आज के नागा समाज को एक नया और प्रगतिशील स्वरूप देता है।

कटाई और बुवाई के पर्व न केवल उनकी कृषि उत्पादकता की सामूहिक अभिलाषा को दर्शाते हैं, बल्कि उनके सामूहिक नृत्य, मनमोहक गीतों और कौड़ियों व हॉर्नबिल पंखों से सजे वस्त्रों के माध्यम से जीवन के उल्लास को भी अभिव्यक्त करते हैं। नरमुंड शिकार और पारंपरिक गोदने जैसी प्रथाएं भले ही इतिहास का हिस्सा बन चुकी हों, लेकिन लोककथाओं और कलाकृतियों में उनके वीरतापूर्ण आख्यान आज भी रचे-बसे हैं। भोजन के क्षेत्र में गाल्हो, अनिशी और अखोनी जैसी संरक्षण विधियां यह दर्शाती हैं कि किस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी नागा समाज ने प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर आत्मनिर्भरता प्राप्त की। अंततः, स्वशासन के क्षेत्र में पुतु मेन्डेन से लेकर आधुनिक VDB तक का सफर यह सिद्ध करता है कि नागालैंड की लोक-संस्कृति केवल जड़ नहीं है, बल्कि वह अपनी जड़ों को बचाए रखते हुए आधुनिक लोकतांत्रिक विकास की मुख्यधारा में निरंतर गतिशील है।

19वीं शताब्दी के अंत में ब्रिटिश प्रशासन और अमेरिकी बैपटिस्ट मिशनरियों के आगमन ने नागा समाज में युगांतरकारी परिवर्तन किए।सिर काटने की प्रथा की समाप्ति और लगभग 95% आबादी के ईसाई धर्म में परिवर्तन ने उनके रहन-सहन, लोकाचारों और मोरंग जैसी संस्थाओं के पारंपरिक ढांचे को पूरी तरह से बदल दिया। बावजूद इसके, नागाओं ने अपनी सांस्कृतिक जड़ों, जैसे कि बहिर्विवाही गोत्र व्यवस्था, भूमि के प्रति गहरा जुड़ाव, कृषि-आधारित लोक पर्वों (जैसे हॉर्नबिल, सेक्रेनेई, मोआत्सु) और अपनी समृद्ध मौखिक लोक-साहित्य परंपरा को आज भी जीवंत रखा है।

13.14 अधिक जानने के लिए पढ़े

- हटन, जे.एच., The Angami Nagas, (1921)

- मिल्स, जे.पी. (Mills, J.P.)—The Ao Nagas (1926) और The Lhota Nagas (1922)
- फुर्निंयो, ए. (Fürer-Haimendorf, Christoph von)—The Naked Nagas (1939)
- यूनुओ, असोसो—The Rising Nagas (1974)
- एलविन, वेरियर (Elwin, Verrier)—Nagaland (1961)
- होरो, लेंगथुई—The Konyak Nagas (1988)
- शिम्रे, जे.—The Origin and Culture of the Nagas (1988)
- राव, वी. नागेश्वर—A Century of Tribal Politics in North-East India (1987)
- गांगमेई, क.—History of the Zeliangrong Nagas (1989)
- सरकार, सुदेश्ना—Naga Women: A Study in Socio-Economic Change (1998)
- *गुप्ता, रमणिका: उत्तर-पूर्व भारत: समाज और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008*
- *शर्मा, रामशरण: भारत की जनजातीय संस्कृति: उत्तर-पूर्व भारत, मेश्नल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2013*

13.15 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न संख्या 1 का उत्तर: यिमचुंगर मुख्य रूप से म्यांमार की सीमा से लगे तुएनसांग और किफिरे जिलों में निवास करते हैं।

प्रश्न संख्या 2 का उत्तर: 2पोचुरी मुख्य रूप से मेलुरी जिले में निवास करते हैं। इनकी पहचान तीन नागा समुदायों-'कुपो', 'कुचु' और 'खुरी' के विलय से बनी है। नाम तीन मूल गाँवों (सापो, केचुरी और खुरी) के संक्षिप्त रूप से मिलकर बना है। ये मुख्य रूप से सीढ़ीदार खेती करते हैं और शिकार, मछली पकड़ने और बांस शिल्प (जैसे 'अतुतु' नामक पारंपरिक बांस की तुरही) में माहिर हैं।

प्रश्न संख्या 3 का उत्तर: 'तितली नृत्य' जेलियांग पारंपरिक नृत्य है, जो लामसिंगी पर्व के दौरान प्रदर्शित किया जाता है।

प्रश्न संख्या 4 का उत्तर: यिमचुंगर जनजाति के पारंपरिक पोशाक में शॉल, मुकुट और विशेष आभूषण शामिल हैं।

13.16 अभ्यास प्रश्न

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए

1. नागालैंड की स्थापना कब और किस परिस्थिति में हुई?
2. नागा समाज में कुल व्यवस्था की विशेषताएँ बताएँ।
3. ईसाई धर्म के नागा समाज पर क्या प्रभाव पड़े?
4. सिर काटने की प्रथा का नागा समाज में क्या महत्व था?
5. नागा व्यंजनों की दो विशेषताएँ लिखें।
6. गाँव परिषद की नागा समाज में क्या भूमिका है?
7. झूम खेती क्या है? इसकी दो विशेषताएँ लिखें।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए-

1. नागालैंड की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करते हुए 'नागा' शब्द की व्युत्पत्ति से जुड़े विभिन्न सिद्धांतों की विवेचना कीजिए।
2. नागालैंड की सामाजिक संरचना और जनजातीय अवस्थिति का विस्तृत विवरण दीजिए।
3. कोन्याक नागा समाज में 'नरमुंड शिकार'और 'गोदने' के बीच के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक संबंधों की गहन समीक्षा कीजिए।
4. 'गेंना' प्रथा से आप क्या समझते हैं? नागा समाज में इसके प्रकारों, नियमों और धार्मिक-सामाजिक महत्व पर प्रकाश डालिए।



This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/